क. यरदन नदी पार करना (यहोशू 3):

- ❖ **पवित्रता की आवश्यकता**
  - — 40 वर्षों तक, बादल ने शिविर उठाने और प्रस्थान करने का संकेत दिया था, और सन्दूक ने इस्राएल को उसके नए गंतव्य तक पहुंचाया (गिनती 9:17; 10:33)।
  - — अब कूच करने का समय आ गया था। उन्होंने शित्तीम से शिविर उठाया और तीन दिन तक यरदन नदी के उस पार डेरा डाले रहे। फिर उन्हें सन्दूक के पीछे-पीछे वादा किए गए देश में जाने का आदेश मिला (यहोशू 3:1-3)।
  - — सन्दूक के पीछे-पीछे जाने में शामिल है
    - (1) परमेश्वर की आज्ञाएँ मानना (10 आज्ञाएँ)
    - (2) परमेश्वर की देखभाल पर भरोसा रखना (मन्ना से भरा पात्र)
    - (3) परमेश्वर द्वारा नियुक्त अगुवों का आदर करना (हारून की छड़ी)
  - — लेकिन एक शर्त थी: उन्हें पवित्र किया जाना था (यहोशू 3:5)। इस अभिषेक में अनुष्ठानिक शुद्धिकरण (कपड़े और शरीर धोना), पाप का त्याग करना, और परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति ग्रहणशील रवैया रखना शामिल था।
- ❖ **परमेश्वर के आश्चर्यकर्म**
  - — परमेश्वर ही "आश्चर्यकर्म करनेवाला" है (भजन संहिता 72:18)। इसलिए, हम उसे एकमात्र परमेश्वर के रूप में पहचानते हैं (भजन संहिता 86:10); हम उसके अद्भुत कार्यों को याद करते हैं (भजन संहिता 77:11); और हम उसके अद्भुत कार्यों का वर्णन करते हैं (भजन संहिता 96:3)।
  - — जिसने सब कुछ रचा है, उसके लिए कुछ भी न तो कठिन है और न ही अद्भुत (यिर्मयाह 32:17; लूका 1:37)। इसलिए हम भरोसा रख सकते हैं कि वह हमारे जीवन में भी आश्चर्यकर्म कर सकता है (भजन संहिता 107:8)।
  - — यरदन नदी को पार करना परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों में से एक है, जो भविष्यवाणी के अनुसार एक और महान आश्चर्यकर्म की ओर संकेत करता है जिसे करने की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हमसे की है: स्वर्गीय कनान में प्रवेश (जकर्याह 8:6-8)।

ख. याद रखना और भूल जाना (यहोशू 4):

- ❖ **याद रखने के लिए चिह्न**
  - — बाइबल में, एक चिह्न के कई अर्थ हो सकते हैं: एक अद्भुत कार्य (1 राजा 13:3); किसी चीज़ का प्रतीक (उत्पत्ति 9:13); चेतावनी का चिह्न (निर्गमन 12:13); एक विशिष्ट चिह्न (यहेजकेल 20:20); एक स्मारक (उत्पत्ति 28:18)।
  - — यरदन नदी से निकाले गए 12 पत्थर जिन्हें यहोशू ने चिन्ह के रूप में स्थापित किया था, वे आखिर वाले प्रकार के हैं: एक स्मारक।
  - — स्मारक के अलावा, परमेश्वर के मन में क्या उद्देश्य था जब उसने इन पत्थरों को खड़ा करने के लिए कहा (यहोशू 4:6-7)?
  - — नई पीढ़ी को यह जानना था कि परमेश्वर ने क्या किया है। उनका विश्वास परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों पर आधारित होना चाहिए। यह माता-पिता की जिम्मेदारी थी कि वे इस ज्ञान को अपने बच्चों तक पहुंचाएं (व्यवस्थाविवरण 4:9)। इस ज्ञान के साथ, हममें से प्रत्येक को अपने विश्वास के अनुसार जीना चाहिए।
- ❖ **भूल जाने के खतरे**
  - — गिलगाल में 12 स्मारक पत्थर स्थापित करते समय, यहोशू ने दो बातों पर ज़ोर दिया (यहोशू 4:23):
    - (1) परमेश्वर ने ***हमारे*** सामने (यहोशू, कालेब और मिस्र से निकली पीढ़ी के कुछ लोग जो अभी भी जीवित थे) लाल सागर को सुखा दिया।
    - (2) परमेश्वर ने ***तुम्हारे*** सामने (रेगिस्तान में जन्मी नई पीढ़ी, और कनान पर विजय पाने के लिए नियत) यरदन नदी को सुखा दिया।
  - — नई पीढ़ी पर अपने माता-पिता जैसी ही गलती दोहराने का खतरा था: परमेश्वर के महान कार्यों को भूल जाना। दुर्भाग्य से, वे भूल गए, और उन्हें इसका खामियाजा भुगतना पड़ा (न्यायियों 3:7-8)।
  - — तो फिर, यह कितना ज़रूरी है कि हम अपने मन में ताज़ा रखें कि कैसे परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों की देखभाल की है, और वे पल जब हमने अपनी आँखों से परमेश्वर के शक्तिशाली हाथ को देखा है!

ग. यरदन नदी के मील के पत्थर

- ❖ लाल सागर और यरदन नदी को पार करना दो ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जो छुटकारे के इतिहास में मील के पत्थर के रूप में एक दूसरे से जुड़ गई हैं (भजन संहिता 66:6; भजन संहिता 114)। साथ मिलकर, ये पाप से हमारी मुक्ति और अनन्त जीवन तक हमारी पहुँच का प्रतीक हैं।
- ❖ चमत्कारिक रूप से यरदन नदी को पार करना और परमेश्वर की उपस्थिति में लाया जाना एलिय्याह के लिए एक वास्तविकता थी (2 राजा 2:1, 7, 8, 11)।
- ❖ हालाँकि, एलीशा के लिए यही घटना पवित्र आत्मा के ग्रहण का संकेत थी, जिसने उसे उसका विशेष कार्य पूरा करने में सक्षम बनाया (2 राजा 2:14-15)।
- ❖ यरदन के पानी में प्रवेश करने से यीशु पर भी यही प्रभाव पड़ा, जिसे पवित्र आत्मा द्वारा उसका विशेष कार्य पूरा करने के लिए सशक्त बनाया गया: हमें पाप से मुक्त करना और हमें अनन्त जीवन देना (मरकुस 1:9-11; यूहन्ना 1:29; 3:16)।